सत्य का व्यावहारिकतावादी सिद्धांत (Pragmatic Theory of Truth)

ज्ञान की सत्यता की कसौटी के रूप में व्यावहारिकतावाद एक बिल्कुल व्यवहारिक कसौटी को अपनाया, जिसके अनुसार किसी भी ज्ञान की सत्यता उसकी व्यावहारिक परिणामों पर निर्भर करती है| यदि किसी ज्ञान की उपयोगी, लाभकारी एवं प्रत्याशित परिणाम निकलते हैं तो वह सत्य है, अन्यथा असत्य| इसलिए किसी ज्ञान को जब तक व्यवहारिक जीवन और व्यावहारिक संदर्भ से हम नहीं जोड़ेंगे तब तक हम उसे सत्य असत्य नहीं कह सकते| सत्यता की व्यावहारिकतावादी सिद्धांत सत्य को सापेक्ष और परिवर्तनशील होने के साथ-साथ उससे व्यावहारिक भी मानता है| सत्य की सत्यता जांचने के लिए इस सिद्धांत के अनुसार हमें इनके व्यावहारिक परिणामों को देखना होगा| जैसे ऑक्सीजन का अपेक्षित परिणाम है कि उसके संसर्ग से बत्ती जल जाएगी, पानी का अपेक्षित परिणाम है कि वह प्यास बुझाएगा, पंखा का अपेक्षित परिणाम है कि उससे हवा लगेगी| तो इन परिणामों को देखकर ही हम कह सकेंगे कि हमारा कोई ज्ञान सत्य है या नहीं| संदर्भ, व्यवहार आदि से बिल्कुल स्वतंत्र रखकर किसी ज्ञान को सत्य असत्य नहीं कहा जा सकता|

सत्यता संबंधी व्यावहारिकतावादी सिद्धांत के प्रतिपादक के रूप में अमेरिका के तीन दार्शनिक प्रमुखता से जाने जाते हैं | वे हैं चार्ल्स पीयर्स, विलियम जेम्स और जॉन डीवी| पीयर्स ने यह संकेत दिया कि केवल तर्क जाल से अथवा बाल की खाल निकालने से किसी सत्य का उद्घाटन नहीं होता| इसके लिए व्यावहारिक परिणाम या फल सामने आना चाहिए| पीयर्स के अनुसार सामान्य रूप से फलवादी विधि इस धारणा में निहित है कि विचार के सत्य असत्य का अर्थ और उनकी वैधता परिणाम अथवा फल के आधार पर जांच की जानी चाहिए| अर्थात यदि कोई विचार अनुकूल फल देता है तो वह सत्य है अन्यथा असत्य| किसी एक विषय के सत्य और असत्य के मध्य पाए

जाने वाले अंतर के आधार पर व्यावहारिक परिणामों को भी परखा जा सकता है| यदि वह व्यवहार अनुकूल रूप से फलदाई है तो सत्य है और प्रतिकूल होने पर असत्य है| किसी विश्वास की सत्यता उसके व्यावहारिक परिणामों के द्वारा परखा जाना चाहिए| पीयर्स के अनुसार यह सिद्धांत मुख्य रूप से सत्य को परखे जाने के लिए है| पीयर्स की मान्यता है कि सत्य की परीक्षा व्यवहारिक परिणामों द्वारा होती है; परंतु यह आवश्यक नहीं है कि सत्य इन परिणामों में रहता हो|

विलियम जेम्स अपने सिद्धांत का प्रतिपादन करते हुए कहते हैं कि सत्यता हमारे कुछ विचारों का गुणधर्म है तथा इसका अर्थ है वास्तविकता के साथ मेल| उसी प्रकार असत्यता का अर्थ है वास्तविकता के साथ विरोध| वास्तविकता के साथ विचारों के मेल का यहां अर्थ व्यावहारिकता के संदर्भ में उनकी सत्यापनीयता से है और सत्यापनीयता का अर्थ यह देखना है कि उन विचारों से अपेक्षित व्यावहारिक परिणाम निकलते हैं या नहीं| यदि हमारे मन में यह विचार हो यानी यदि हमें ऐसा ज्ञान होता हो कि हमारे सामने या कुछ दूरी पर अमुक वस्तु है या अमुक क्रिया चल रही है तो इसकी सत्यता इस बात में निहित होगी कि उस वस्तु या क्रिया में जो परिणाम अपेक्षित हो वे उससे प्राप्त होते हैं| सिर्फ हमारे विचारों का वास्तविकता से मेल सत्यता का ना तो स्वरूप निर्धारित करता है और ना उसकी कसौटी, उसके लिए आवश्यक है हमारे विचारों की वास्तविक परिणामों के संदर्भ में सत्यापनीयता| विचारों की सत्यता के लिए उन से प्राप्त होने वाले व्यावहारिक परिणामों पर जेम्स इतना बल देते हैं कि कभी-कभी उन से प्राप्त फल या उपयोगी परिणामों को ही वे सत्यता की कसौटी मानते हैं| वे कहते हैं कि वही विचार सत्य है जिन से उपयोगी परिणाम प्राप्त होते हैं यानी जिनसे जीवन में सफल परिणाम नहीं प्राप्त होते हुए असत्य हैं|

जॉन डीवी अपने ढंग से बातों को रखते हुए सत्यता को " प्रमाणिक अभीकथनीयता" के रूप में परिभाषित करते

हैं| इसका मतलब है कि कोई भी ज्ञान उसी स्थिति में सत्य है जब इसका अभीकथन सफल व्यावहारिक परिणामों द्वारा प्रमाणित हो| ज्ञान से खासतौर पर डीवी वैज्ञानिक ज्ञान समझते हैं और कहते हैं कि यह हमारी खोज का परिणाम है| कोई भी ज्ञान तभी सत्य है जब हमारी खोज या अनुसंधान को सफलतापूर्वक आगे बढ़ाने में यह सहायक हो| सत्यता की मुख्य कसौटी है व्यावहारिक सफलता और इसलिए वही ज्ञान सत्य है जो स्वयं हमें व्यवहारिक लाभ प्रदान करता है| फिर सत्यता की अवधारणा सापेक्ष अवधारणा है और एक ही ज्ञान या निर्णय जो एक संदर्भ में सत्य हो सकता है, दूसरे संदर्भ में असत्य भी हो सकता है|